# आओ मनाएं इको होली

**नवनीत कुमार गुप्ता**

होली का त्यौहार प्रकृति के रंग-बिरंगे रूपों से जुड़ा है। होली के त्यौहार के समय ऋतु परिवर्तन की बेला में प्रकृति रंगों के माध्यम से परिवर्तन का स्वागत करती है। इस त्यौहार के दौरान सभी हर्षोल्लास के साथ प्रकृति के रंग से सराबोर हो जाते हैं। फागुन के महीने में मनाया जाने वाला यह त्यौहार फसल चक्र से भी जुड़ा है। इस दौरान खेतों में गेहूं, चना व अन्य फसलें पक जाती हैं और किसान कड़ी मेहनत के बाद कुछ दिन इस त्यौहार के बहाने अपने जीवन में खुशियों के रंग भरते हैं। अन्य त्यौहारों की भांति इस त्यौहार से पौराणिक कथा भी जुड़ी है। यह कहानी हिरण्यकश्यप, प्रहलाद एवं होलिका से सम्बंधित है।

समय के साथ-साथ त्यौहारों का रूप और उनके मनाने का तरीका भी बदला है। पहले होलिका के प्रतीक रूप में खेत से फसल काटने पर बचे डंठलों को या फिर थोड़ी-सी सूखी और बेकार लकड़ियों को जलाया जाता था और होलिका दहन गांव में एक स्थान पर ही होता था। लेकिन आज हर गली में होलिका दहन के नाम पर टनों लकड़ियां स्वाहा कर दी जाती है। गली-गली में होने वाला होलिका दहन पर्यावरण को प्रदूषित करता है। होलिका दहन के नाम पर हरे पेड़ों की बलि दे दी जाती है। होलिका दहन के इस विकृत रूप के बारे में गंभीर चिंतन के साथ ही ऐसे कदम उठाने की ज़रूरत है जिनसे पर्यावरण को हानि न हो और पेड़ों की भी रक्षा हो सके।

मानव प्रकृति के विभिन्न रंगों से अपने जीवन को भी खुशियों से रंग ले, इसी को ध्यान में रखते हुए होलिका दहन के अगले दिन रंग उत्सव की परंपरा आरंभ की गई होगी। होली के समय रंगों का विशेष महत्त्व होता है। हमारे देश में रंगों का पर्व होली पहले प्राकृतिक रंगों से मनाया जाता था। हमारे यहां होली के रंगों के लिए पलाश व चंपा आदि अनेक वृक्षों के फूलों तथा केसर, हल्दी, नील के पौधों

व गेरुआ मिट्टी आदि से तैयार रंग उपयोग किए जाते रहे हैं। औद्योगिक युग से पहले सारे विश्व में प्राकृतिक रंगों का ही चलन था। लेकिन आज प्राकृतिक रंगों का स्थान कृत्रिम रंगों ने ले लिया है। जहां प्राकृतिक रंग कुछ ही प्रकार के होते हैं वहीं कृत्रिम रंग लाखों प्रकार के हैं।

सर्वप्रथम सन् 1856 में कृत्रिम रासायनिक रंग का निर्माण रसायन शास्त्री हेनरी पर्किन ने किया था। पहला रासायनिक रंग कोलतार पर आधारित एज़ो डाई था। अब तो बाज़ार में हानिकारक रासायनिक रंगों की भरमार है। बाज़ार में अबीर-गुलाल के नाम पर सस्ते सूखे रंग बिकते हैं, उनमें सीसे का ऑक्साइड, नीला थोथा, एल्युमिनियम ब्रोमाइड, मर्करी सल्फाइड, जैंशन वायलेट, प्रशियन ब्लू, और क्रोमियम आयोडाइड जैसे ज़हरीले पदार्थ होते हैं। इन रासायनिक पदार्थों के कारण बुखार, पेट दर्द, जलन, खुजली, उल्टी-दस्त और आंख की बीमारी हो सकती है। बाज़ार में मिलने वाले सूखे रंगों में पिसा हुआ कांच, बजरी और अभ्रक मिला होता है। इनके अलावा बाज़ार में मिलने वाले रंगीले पेस्ट में भी हानिकारक पदार्थ मिले होते हैं।

रासायनिक रंगों के प्रभाव से एलर्जी हो सकती है जो होली का आनंद किरकिरा कर देती है। इसलिए हमें रासायनिक रंगों के स्थान पर प्राकृतिक रंगों का उपयोग करना चाहिए ताकि होली की मस्ती भी बरकरार रहे और इसी बहाने हम भी प्राकृतिक रंगों में रंग जाएं और हमारा प्रकृति के प्रति प्रेम बना रहे। ***(स्रोत फीचर्स)***